भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक कैप्टन रामसिंह ठाकुर का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र).

सार :- (*Abstract*) भारत की स्वतंत्रता संग्राम में गोरखा समुदाय ने देश की सेवा में लगभग सभी स्तरों पर अपनी सेवाएं दी हैं और वर्तमान में भी दे रहे हैं। राष्ट्र सेवा में अहम् योगदान देने में समुदाय के अनेक हीरो हैं, इसमें से कुछ अहम् हीरे हैं । जिनमें कैप्टन रामसिंह ठाकुर ने समुदाय का नाम ऊंचा किया है । बैंड मास्टर आई. एन. ए. कैप्टन रामसिंह ठाकुर ऐसे स्वतंत्रता सैनानी हैं जो देशभक्ति को अपने संगीत के साथ महान ऊंचाइयों पर ले गए।

1. *भूमिका* -

कैप्टन रामसिंह ठाकुर आज़ाद हिन्द फौज़ के उन गौरवशाली वीर सेनानियों में से एक थे । जिन्होंने गोरखा समुदाय का नाम ऊंचा किया है ।

2. साहित्य की समीक्षा –

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिय चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ जो सक्रिय कार्य किए और भारत की आज़ादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है ।

3.उद्देश्य -

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4.कार्यप्रणाली -

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है । मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है ।

5. योगदान -

रामसिंह ठाकुर का जन्म वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा के मुख्यालय धर्मशाला नगर के निकट सल्लाधारी खन्यारा गांव (पेंशनर लाईन) में 15 अगस्त, 1914 को श्री दिलीपसिंह ठाकुर के घर हुआ था । उस की माता का नाम श्रीमती जानकीदेवी था । वह 6 वर्ष की उम्र में एक स्थानीय स्कूल में दाखिल हो गये और उन्होंने पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की । बाल्यावस्था से ही रामसिंह ठाकुर संवेदनशील स्वभाव के थे । सामान्य विषयों की अपेक्षा उनकी रूचि संगीत, नाटक एवं ललित कलाओं में अधिक थी । उनके पिता दिलीपसिंह ठाकुर ने 2/1 गोरखा राईफ़ल्स में नौकरी की थी ।[1] उन दिनों गोरखा जाति की विरासती परम्परा के अनुसार रामसिंह भी 14 वर्ष की आयु में अपने पिता की ही पलटन 2/1 गोरखा राइफ़ल्स में रिक्रूट ब्वॉय के रूप में शामिल हो गये । संगीत में अत्यधिक रूचि होने के कारण उन्होंने अपने मामूली वेतन से बचत करके एक वायलिन खरीदी । कमांडिग आफ़िसर की धर्मपत्नी ने रामसिंह ठाकुर के मन में संगीत के प्रति विद्यमान रूचि को देखा तो उन्होंने उनके लिए संगीत विद्या सीखने की उपयुक्त व्यवस्था कर दी । तदनुसार रामसिंह बटालियन के वैडमास्टर साज़ैण्ट हडसन से प्रतिदिन चार घण्टे बायलिन बजाना सीखने लगे । रामसिंह ठाकुर को वीणा वादिनी सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त था । अतः उन्होंने बायलिन वादन में शीघ्र ही दक्षता प्राप्त कर ली ।[2]

1 सितम्बर, 1939 को यूरोप में जर्मनी द्वारा पोलैंड पर हमला किये जाने के बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने पोलैंड को तत्काल सहायता पहुँचाने की घोषणा की । 3 सितम्बर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध की घोषणा की गयी । 1941 में जापान का आक्रमण भी ब्रिटेन पर अवश्यंभावी हो चुका था। उस समय रामसिंह ठाकुर लान्स नायक थे। उसके पांच साल के बाद अर्थात् 1940 में वे नायक बने और 1941 में उनकी पदोन्नति हवलदार के पद पर हुई । उसी वर्ष के अन्त तक उनकी नियुक्ति हवलदार मेज़र के रूप में हुई ।[4]

रामसिंह ठाकुर मूल रूप से संगीतकार थे। लेकिन फौज़ी जीवन में संगीतकार को भी समय और परिस्थिति के अनुसार बन्दूक उठाकर रणभूमि में जाने को बाध्य होना पड़ता था। 1941 को रामसिंह ठाकुर रावलपिण्डी में थे। एक दिन अकस्मात् उन्हें अपनी बैण्ड पार्टी के साथ अग्रिम मोर्चे में जाने का आदेश मिला । उस दिन उन्हें अपनी संगीत के साज़ के स्थान पर बन्दूक और गोलियों को उठाते हुए बहुत ही बुरा लगा। फिर भी रामसिंह ठाकुर अपनी रेज़िमेंट 2/1 गोरखा राईफ़ल्स के साथ मुम्बई बन्दरगाह से जहाज़ पर मलाया के लिए चल पड़े । 1941 के अन्त में जापान के द्वारा मित्र सेना के विरुद्ध युद्ध की घोषणा किये जाने के बाद दिन प्रतिदिन युद्ध भीषण रूप लेता रहा । 2 1 गोरखा राईफ़ल्स के कई सैनिक दिसम्बर महीने में ही जापान के युद्ध बन्दी बन चुके थे । युद्ध सामग्री एवं खाद्य पदार्थों के अभाव के कारण उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसी परिस्थितियों में शत्रु के सुनियोजित हमलों से बचना कठिन था । मित्र सेना के कई सैनिकों को जापानी सेना के समक्ष आत्म समर्पण करने को बाध्य होना पड़ा । ऐसी स्थिति में रामसिंह ठाकुर ने भी आत्म समर्पण कर दिया और जापान ने उन्हें युद्ध बन्दी बनाया ।

रामसिंह ठाकुर को भी युद्ध बन्दी के रूप में अन्य युद्ध बन्दियों की तरह कष्टपूर्ण जीवन बिताना पड़ा। माल ढोना, सामान उठाना, रास्ता बनाना और उनकी मुरम्मत करना जैसे शारीरिक श्रम के काम दिनभर करने पर भी युद्ध बन्दियों को पेट भर खाना नहीं मिलता था। जापानियों के आदेशें का पालन न करने वाले युद्ध बन्दियों को गोलियों से भून दिया जाता था। लेकिन वीणा वादिनी सरस्वती पुत्र रामसिंह ठाकुर को अधिक दिनों तक इस प्रकार के अमानवीय व्यवहार का सामना नहीं करना पड़ा। संयोगवश एक संगीत प्रेमी जापानी अधिकारी की उन पर कृपा दृष्टि पड़ी और उसके बाद युद्धबन्दी के रूप में भी उन्हें अपनी संगीत साधना का अवसर मिला।[5]

महान् देशभक्त रासबिहारी बोस के द्वारा भारत की आज़ादी केलिए 'आज़ाद हिन्द संघ' नामक एक क्राँतिकारी संगठन की स्थापना की गयी थी, जिसके वे स्वयं अध्यक्ष थे । प्रसार विभाग के प्रमुख के रूप में के.पी के मेनन, संगठन कार्यों के प्रमुख रूप में एन राघवन, आज़ाद हिन्द फ़ौज के प्रमुख के रूप में जनरल मोहनसिंह तथा सैनिक प्रशिक्षग् विभाग के रूप में लेफिटनेंट कर्नल जी क्यू गिलानी नियुक्त हुए। इन सारी व्यवस्थाओं के अन्तर्गत सितम्बर, 1942 को पन्द्रह सौ से अधिक संख्या में उपस्थित आफ़िसरों और सिपाहियों के साथ आज़ाद हिन्द फ़ौज का विधिवत् गठन हुआ था । इस फ़ौज में शामिल होने वाले सैनिकों में रामसिंह ठाकुर भी थे । संगीत में उनकी विशेष दक्षता को ध्यान में रखते हुए उन्हें आज़ाद हिन्द बैण्ड पार्टी का प्रमुख नियुक्त किया गया । कैप्टन के रूप में उनकी पदोन्नति भी की गयी । इसके बाद आज़ाद हिन्द फ़ौज के रेडियो स्टेशन में रामसिंह ठाकुर को संगीत निर्देशक भी बनाया गया । इस समय आज़ाद हिन्द फ़ौज का कौमी गीत का निर्देशक कैप्टन रामसिंह ठाकुर ने किया था जिसके बोल थे –

"कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा
यह जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा –
तू शेरे हिन्द आगे बढ़, मरने से फिर भी तू न डर
उड़ा के दुश्मनों का सिर, जोशे वतन बढ़ाए जा –
कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा
यह जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा –
तेरी हिम्मत बढ़ती रहे, खुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने तेरे अड़े, तू खाक में मिलाए जा –
कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा
यह जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा –
चलो दिल्ली पुकार के, कौमी निशान सम्भाल के
लाल किले पे गाड़ के लहराए जा लहराए जा –
कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा
यह जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा –"[7]

4 जुलाई,1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, आज़ाद हिन्द फ़ौज की संगीत मण्डली का निरीक्षण् करने के लिए सिंगापुर के कैथे बिल्डिग में गये। उस वक्त उन्होंने कैप्टन रामसिंह ठाकुर से देशभक्ति से ओत प्रोत धुनों और गीतों की रचना करने का आग्रह किया। 15 अक्तूबर, 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निजी सचिव आबिद हुसैन, कैप्टन रामसिंह ठाकुर के पास एक विशेष सन्देश लेकर पहुँचे। उस सन्देश में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कैप्टन रामसिंह ठाकुर से 21 अक्तूबर,1943 को आज़ाद हिन्द फ़ौज की अस्थायी सरकार के स्थापना दिवस के अवसर पर गाने के लिए गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के राष्ट्रीय गीत 'जन गण मन' का संगीतवद्ध हिन्दी रूपान्तरण प्रस्तुत करने का आग्रह किया था । सन्देश में उसी गीत को 'आज़ाद हिन्द अस्थायी सरकार' का राष्ट्रीय गीत बनाने का भी उल्लेख था । आबिद हुसैन तथा एक अन्य देशभक्त गुप्ता जी के सहयोग से 'जन गण मन' का तत्काल ही हिन्दी में रूपान्तरित किया गया और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को एक उपयुक्त समय पर सुनाया गया। इस राष्ट्रीय गीत को सुनकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस खुशी से भाव विभोर हो गये और उन्होंने कैप्टन रामसिंह ठाकुर को उपहार स्वरूप एक सुन्दर बायलिन भेंट की ।

21 अक्तूबर, 1943 को "अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार" का गठन हुआ । अधिकारी वर्ग द्वारा शपथ ग्रहण किये जाने से पहले राष्ट्रीय ध्वजारोहण के अवसर पर कैप्टन रामसिंह ठाकुर के द्वारा संगीतवद्ध किये गये राष्ट्रीय गीत को सभी ने गाया कि –

"शुभ सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग है जागा
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग ।"[8]

23 अक्तूबर, 1943 को विश्व के नौ राष्ट्रों ने, जिसमें जापान भी शामिल था, 'अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार' को मान्यता दे दी। 25 अक्तूबर, 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने ब्रिटेन और अमेरिका के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की । उसके बाद आज़ाद हिन्द सरकार की सेना विभिन्न मोर्चों पर शत्रु को पराजित करके मातृभूमि के उद्धार के लिए आगे बढ़ती रही ।

इसी प्रकार आज़ाद हिन्द फ़ौज की बटालियन आराकान, मणिपुर और इम्फाल तक बढ़ गयी । लेकिन कई कारणों से आज़ाद हिन्द फ़ौज को मणिपुर, कोहिमा के क्षेत्र में भारी असफलता का सामना करना पड़ा। जापानी सेना अपने प्राणों की रक्षा के लिए पहले ही रिटायर हो रही थी । इस प्रकार स्थिति को प्रतिकूल पाकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के विचार में परिवर्तन हुआ । उन्होंने किसी अन्य देश से भारत के इस स्वाधीनता संर्घष को जारी रखन का विचार करते हुए कर्नल लंगानाथन को सेना का दायित्व सौंपा और अप्रैल 1945 के अन्तमें वे रंगून से पलायन कर गये। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी पलायन से पहले सम्भवतः आज़ाद हिन्द फ़ौज के सेनानियों को आत्म समर्पण करते हुए संर्घष जारी रखने का आदेश दिया था। कर्नल लंगानाथन के नेतृत्व में 4 मई, 1945 को आज़ाद हिन्द फ़ौज की एक टुकड़ी ने मित्र सेना के समक्ष आत्म समर्पण किया । विभिन्न मोर्चों पर डटी टुकड़ियों के सैनिकों को गिरफ्तार करके युद्ध बन्दी बनाया गया और कई सैनिकों ने आत्म समर्पण कर दिया ।

आज़ाद हिन्द फ़ौज के अनेक सैनिक फिर युद्ध बन्दी बना लिये गये। कैप्टन रामसिंह ठाकुर भी युद्ध बन्दी बना लिए गये। युद्ध बन्दी के रूप में उन्हें पहले कलकत्ता ले लाया गया, जहाँ युद्ध बन्दी शिविर की काल कोठरी में उन्हें कुछ दिन

रखा गाया। यहाँ से फिर, उन्हें दिल्ली के लालकिले की काल कोठरी में ले जाया गया इस समय लालकिले की सैनिक अदालत में अनेक युद्ध बन्दियों के ऊपर मुकद्दमें चल रहे थे। कैप्टन रामसिंह ठाकुर के विरूद्ध भी आज़ाद हिन्द फ़ौज में शामिल होकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध विध्वंसात्मक कार्य करने के तथाकथित अपराध के लिए मुकद्दमा चलाया गया। उस समय उन्हें भेद खोलने के लिए कई प्रकार की यातनाएँ दी गयीं, लेकिन वे टस से मस नहीं हुए।

इसी प्रकार आज़ाद हिन्द फ़ौज की बटालियन आराकान, मणिपुर और इम्फाल तक बढ़ गयी। लेकिन कई कारणों से आज़ाद हिन्द फ़ौज को मणिपुर, कोहिमा के क्षेत्र में भारी असफलता का सामना करना पड़ा । जापानी सेना अपने प्राणों की रक्षा के लिए पहले ही 'रिटायर' हो रही थी । स्थिति को इस प्रकार प्रतिकूल पाकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के विचार में परिवर्तन हुआ। उन्होंने किसी अन्य देश से भारत के इस स्वाधीनता संर्घष को जारी रखन का विचार करते हुए कर्नल लंगानाथन को सेना का दायित्व सौंपा और अप्रैल1945 के अन्त में वे रंगून सेपलायन कर गये। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी पलायन से पहले सम्भवतः आज़ाद हिन्द फ़ौज के सेनानियों को आत्म समर्पण करते हुए संर्घष जारी रखने का आदेश दिया था। कर्नल लंगानाथन के नेतृत्व में 4 मई,1945 को आज़ाद हिन्द फ़ौज की एक टुकड़ी ने मित्र सेना के समक्ष आत्म समर्पण किया। विभिन्न मोर्चों पर डटी टुकड़ियों के सैनिकों को गिरफ्तार करके युद्ध बन्दी बनाया गया और कई सैनिकों ने आत्म समर्पण कर दिया।

1945 को आज़ाद हिन्द फ़ौज के मेज़र जनरल शाहनबाज़ खान, कर्नल गुरबख्श सिंह तथा लेफ्टिनेण्ट कर्नल पीके सहगल जैसे कुछ प्रमुख आफ़िसरों के विरूद्ध सैनिक अदालत में कार्रवाई की गयी। बाद में ये सारे आफ़िसर कारावास की सज़ा से मुक्त हुए ।[9]

8 अप्रैल 1946, को कैप्टन रामसिंह ठाकुर भी कैद से मुक्त हुए और वे भाग्सू (धर्मशाला) स्थित अपने घर चले गये । लेकिन वे अपने घर में अधिक दिन नहीं रह पाये । क्योंकि कुछ दिनों के बाद ही आज़ाद हिन्द फ़ौज की कमेटी ने उन्हें दिल्ली बुलाया । दिल्ली प्रवास की अवधि में रामसिंह ठाकुर को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू आदि कई महान् नेताओं से मिलने का अवसर मिला । पण्डित जवाहरलाल नेहरू की इच्छा के अनुसार रामसिंह ठाकुर ने आई एन ए आर्केस्ट्रा का गठन किया और देश के विभिन्न स्थानों में राष्ट्रप्रेम तथा देशभक्ति के गीतों का प्रचार करने के लिए भ्रमण किया । उनके द्वारा गाये गये गाने व तैयार की गई धुने निम्न प्रकार से थी कि –

- शुभ सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य है जागा –
- उठो, सोये भारत के नसीबों को जगा दो –
- हम देल्ही-देल्ही जाएंगे, हम अपना हिन्द बनायेंगे –
- हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार –
- कदम कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा –
- सुभाष जी, सुभाष जी, वह जाने हिन्द आ गए –
- हे वीर बालक हो, जाति लाई सुधार –
- आओ लहराएं तिरंगा प्यारा-
- हिन्दी सिपाही, हिन्दी सिपाही –
- जय हो, महादेश हमारा, भारत हो संसार प्यारा –
- कौमी तिरंगे झण्डे,ऊँचे रहो जहाँ में –
- आज़ाद हिन्द सेना ने जब ....(कव्वाली)-
- सबसे ऊँचा है दुनिया में झण्डा हमारा –
- नेताजी हमारे,हँसते-हँसते जीना – इत्यादि ।[10]

कैप्टन रामसिंह ठाकुर के द्वारा की गई देश सेवा और त्याग निरर्थक नहीं हुआ । उन्हें कैद मुक्त किये जाने के एक वर्ष पूरा होने के कुछ समय के बाद ही यानी 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वाधीन हो गया। जिस स्वाधीन भारत के स्वर्णिम स्वप्न को संजोते हुए रामसिंह ठाकुर आज़ाद हिन्द फ़ौज में शामिल हुए थे, उसे अपने ही आँखों से साकार देखते हुए उन्हें अपार प्रसन्नता हुई थी ।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसको स्वदेश से प्यार नहीं ।।

उसी दिन जब भारत के पहले प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू, ऐतिहासिक लालकिले पर राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराने लगे तो कैप्टन रामसिंह ठाकुर और उसकी आर्केस्ट्रा पार्टी ने आज़ाद हिन्द फ़ौज का कौमी तराना का धुन बजाया।

''शुभ सुख चैन की बरखा वरसे, भारत भाग्य है जागा''[11]

स्वतन्त्रता के पश्चात् स्वतन्त्रता सेनानी कैप्टन रामसिंह ठाकुर ने भारत सरकार से सेवा की इच्छा प्रकट की । 19 अगस्त, 1948 को उन्हें उत्तर प्रदेश प्रोविन्सियल आर्म्ड कंसटेबुलेरी के बैण्ड में सब इन्स्पेक्टर के पद पर नियुक्ति मिली । पाँच वर्ष के बाद इंस्पेक्टर के पद पर पदोन्नति हुई ।1960 में रामसिंह ठाकुर आनरेरी डिप्टी सुपरिंटेण्डेट आफ पुलिस के पद पर नियुक्त हुए और 30 जून, 1974 को वे उसी पद पर सेवानिवृत हुए । जुलाई, 1974 से उन्हें आजीवन पुलिस कैप्टन बनाया गया ।[12]

देश की स्वतन्त्रता के लिए उनकी सेवाओं को मान्यता मिली और 15 अगस्त, 1972 को भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने कैप्टन रामसिंह ठाकुर को स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन देकर सम्मानित किया था । अप्रैल, 2002 को काँगड़ा के आज़ाद हिन्द फ़ौज के एक वीर स्वतन्त्रता सेनानी व प्रख्यात संगीतकार रामसिंह ठाकुर का लखनऊ में देहान्त हो गया ।[13]

6. निष्कर्ष:-

कैप्टन रामसिंह ठाकुर की देशभक्ति से ओत प्रोत व बलिदान की भावना को प्रेरित करने वाली गीतों व धुनों की गूंज आज भी प्रत्येक के हृदय तन्त्री की तारों को झंकृत कर देती है । जिनका योगदान काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में तथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेंगे ।

7. संदर्भ सूची :-

1.राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ, **253.; *देखिये,*** साक्षात्कार: श्रीमती रूकमणी वहन रामसिंह ठाकुर, परिशिष्ट; **(8)** पृष्ठ **383, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.***

2. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **253.**

3. *भागसू वाणी*: धर्मशाला, मई **2002,** अंक **26.** पृष्ठ **5.**

4. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **253.; *देखिये,*** अमर *उजाला* : धर्मशाला, **17** आगस्त, **2005.**

5. *भागसू वाणी*: धर्मशाला, मई **2002,** अंक **26.** पृष्ठ **3.**

6. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **255.**

7. *भागसू वाणी*: धर्मशाला, मई **2002,** अंक **26.** पृष्ठ **4.**

8. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **255,256.**

9. *भागसू वाणी*: धर्मशाला, मई **2002,** अंक **26.** पृष्ठ **3.**

10. वही, पृष्ठ **3.**

11. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **257.; *देखिये,*** भ*गसू वाणी*: धर्मशाला, मई **2002,** अंक **26.** पृष्ठ **5.**

12. राई, एम.पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, **2000** पृष्ठ **257.**

13. साक्षात्कार: श्रीमती रूकमणी वहन रामसिंह ठाकुर, परिशिष्ट; **(8)** पृष्ठ **383, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.; *देखिये, अमर उजाला*** : धर्मशाला, **17** आगस्त, **2005.; *देखिये,पंजाव केसरी*** : जालन्धर, **16** अप्रैल, **2002.**